

५॥ प्रवाम् ॥

अंगसदावयाया गरुडसनावन युगमामिया ॥ २९ ॥ ॥ १ ॥ नागधर्मसनावन ॥
 गात्रमूलमा ॥ ३० ॥ ॥ २ ॥ नागधर्मसनावन ॥ ३१ ॥ ॥ ३ ॥ नागधर्मसनावन ॥
 दुपिगसनाहि ॥ ३२ ॥ ॥ ४ ॥ नागधर्मसनावन ॥ ३३ ॥ ॥ ५ ॥ नागधर्मसनावन ॥
 कु ॥ ३४ ॥ ॥ ६ ॥ नागधर्मसनावन ॥ ३५ ॥ ॥ ७ ॥ नागधर्मसनावन ॥
 न्य ॥ ३६ ॥ ॥ ८ ॥ नागधर्मसनावन ॥ ३७ ॥ ॥ ९ ॥ नागधर्मसनावन ॥
 धन ॥ ३८ ॥ ॥ १० ॥ नागधर्मसनावन ॥ ३९ ॥ ॥ ११ ॥ नागधर्मसनावन ॥
 धर्म ॥ ४० ॥ ॥ १२ ॥ नागधर्मसनावन ॥ ४१ ॥ ॥ १३ ॥ नागधर्मसनावन ॥

२७

卷之四

वन २ वज्रसूर्य अह्नीनगमा २ दृढमयसमनसदा २ मरुता २ करपुककुकमालधन २ नगना
धकवनवज्रसिन्ध २ माध्वगुनिस्वनगावपनमा २ साध्वगसहजम २ साहावधन २ गहि
जिनेजिकसमय २ कायनिर्वधन २ वक्रधन २ द्वाद्विपुलावकसुगता २ मधनमाधु
गपुनवमोकर २ द्वाद्विपुलावकसुगता २ मधनमाधु
२ नागग्वेगुगिनि ॥ गानअनूमाथ ॥ राठाहनलाक्रियानिनसम्बन ॥ धनयिकवालिनरुसा २
धियनायनमणि ॥ यामभान २ मकठकभादिगवना २ ॥ २ ॥ ननमानूवसीवनदेया २
सहजसुदनीमानूकाला २ रुमविनाजिनवज्रवानाहि २ रुदामहियायिनसाना २ ॥

सूत्रासनवेदिगवचना ॥ मरुगदगापाइकमलमहिमदिगनडवयेनयेठौकाया
 वाअरुवगविष्ठपिगनडवद्यवुडनाना ॥ दिनरशिनयकितनयनागहता ॥ धिनगसित्
 क्षनाकजलनयनरकमुनिकयनरुनयीगीवाना ॥ ५२ ॥ कनतिकपालधनाम
 मालरुषितरकधखद्वागकपालधनाना ॥ ५३ ॥ रुनयिसनगवजवाकुनीडादो
 शीवजयोगिनिवनदयसाद ॥ ५४ ॥ ५० ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥
 ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥
 तिनिनायेनवउवैवक्रविहलारकलरुषयिथानमीगवहामा ॥ ८१ ॥ हामकनेयाहाम

नहिवडमालारलागधममारुवधिवच्छादिया ॥ ८२ ॥ बामदधिनकनसुनवयिप्यगार
 आलीगवजाननश्रादुतिकलिया ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
 १०१ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ ११४ ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ११८ ॥ ११९ ॥ १२० ॥
 १२१ ॥ १२२ ॥ १२३ ॥ १२४ ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ १२७ ॥ १२८ ॥ १२९ ॥ १३० ॥ १३१ ॥ १३२ ॥ १३३ ॥ १३४ ॥ १३५ ॥ १३६ ॥ १३७ ॥ १३८ ॥ १३९ ॥ १४० ॥
 १४१ ॥ १४२ ॥ १४३ ॥ १४४ ॥ १४५ ॥ १४६ ॥ १४७ ॥ १४८ ॥ १४९ ॥ १५० ॥ १५१ ॥ १५२ ॥ १५३ ॥ १५४ ॥ १५५ ॥ १५६ ॥ १५७ ॥ १५८ ॥ १५९ ॥ १६० ॥
 १६१ ॥ १६२ ॥ १६३ ॥ १६४ ॥ १६५ ॥ १६६ ॥ १६७ ॥ १६८ ॥ १६९ ॥ १७० ॥ १७१ ॥ १७२ ॥ १७३ ॥ १७४ ॥ १७५ ॥ १७६ ॥ १७७ ॥ १७८ ॥ १७९ ॥ १८० ॥
 १८१ ॥ १८२ ॥ १८३ ॥ १८४ ॥ १८५ ॥ १८६ ॥ १८७ ॥ १८८ ॥ १८९ ॥ १९० ॥ १९१ ॥ १९२ ॥ १९३ ॥ १९४ ॥ १९५ ॥ १९६ ॥ १९७ ॥ १९८ ॥ १९९ ॥ २०० ॥

मन्त्रिने ३१

[illegible]

पञ्चमः

[illegible]

विमलवर्णः ३३

हृदयविह्वलिता ॥ ॐ ॥ सूर्यमलुलमाभतालुवमृत्तिश्च नवगिन्मालसूक्ष्महिता ॥
॥ ॐ ॥ सतगुर्वननसिनेगतधनियारवजवावाहिआलिगिता ॥ ॐ ॥ यज्ञ ॥
१नागहृदविगागलवैया ॥ अश्वकृष्णपालदिगंविदिगंरुवन ॥ चसानमानवगुनघनं
गगलसखनगगलमनकृर्नकावा ॥ गगलदामात्रधैथवाजियान ॥ ॐ ॥ कृष्णनमामि
धैवआहारशकिनीयश्चरुवति ॥ सानजकिनीगनदशगहगगा ॥ २यूवडरुनपक्षि
मदक्षिणवगुखवन ॥ विघनमानविघनखण्डियान ॥ २वजजकिनिधानवगालशकिनी ॥ व
अलशकिनीवगुनदवी ॥ ॐ ॥ सिद्धिनीव्याधिनी ॥ अश्वकडवाकिनी ॥ खलंगयन

विमलवर्णः ३३

अश्वकडलुरुसुशकिनीदिकिनीवडसिकवाजिनी ॥ धालनवादनकाधवदनी ॥ ॐ ॥
जिनजननादवीजकिनीउरुययिसुवण ॥ पवरमूडारनणरुषणीया ॥ २खण्डोश्वकडकव
अश्वकडविलंगपाठमश्वगमामिदवीहीहानभववा ॥ ॐ ॥ यज्ञ ॥ ॐ ॥
१नागमालव ॥ गलमाथ ॥ वजिनिधानवगानावगुलिनी ॥ २सिद्धिनीव्याधिनी ॥ अश्वकडवाकि
नी ॥ ॐ ॥ नमाविष्णीयागमन्वनहानभववा ॥ २जिनगुदवीगुखवनयविता ॥ ॐ ॥
यूवडरुनपक्षिमदक्षिणदिगदवी ॥ शकिनीदिकिनीवडसिकवाजिनी ॥ ॐ ॥
वहनेदिगठश्वकडलनकुदवी ॥ २जिनिनीदवीनावकुदवी ॥ ॐ ॥ रुनिहववका ॥ ॐ ॥

पुनः प्रथमं वाग्या ५१

२२५ काग व म ३

असूत्रगताश्चाष्टायागिनीसमनसरावा ॥ ५१ ॥ ॐ ॥ नागदेवदी ॥ गालवय ॥
पैकतयमगतमनियान् समयाचार्यविष्णुहलन २५३दिमं देवावलशान् ठरुलकं डानयति
पिदिष्टुनिनवात्रन ॥ ५२ ॥ शिविनवीनध्वनवलिदानदहा दानयतिष्ठु अवनकोत्रन ॥ ५३ ॥
पूर्ववेनःवन दक्षिनवत्तसीरुव पश्चिमश्रमगारुकिनयापियात्र २५३रुवश्रमाद्यसिद्धि
मांयश्रुकथा वालिमानवडवकथपियात्र ॥ ५४ ॥ समाधिष्टीसम्भनमांयकालवक
हुवजविष्णुस्वत्तन २ नानावाधिसत्त्वश्रीवाधे वालिमानवडयापियात्र ॥ ५५ ॥
सिंहनादवाजियात्र उमत्रवाजकं अष्टयागिनीविधियात्र उमत्रवाजकं या अष्ट

काय

मनि

मनुसमयज ५२

२२६ काग व म ३

यागिनीमनियान् २ जालन्धनियुक्तकर्षुयागभव्याया वालिमंत्रवडवकथपियात्र ॥
॥ ५६ ॥ ॐ ॥ नागदेवदी ॥ गालमा ० ॥ मधुलसमयवकमधुलसी
युल्लुशद्वादशरुवडवात्रवयन ॥ ५७ ॥ जानतुकत्रयष्टीसम्भनयागिनी २ श्रीयास्वकना
नोदवीगान्दी ॥ दाकिनीला माखरुनादात्रपिनी २ वाविमानवडवापियात्र ॥ ५८ ॥
कायवाकविहृतिनीरुवन २ दानयति याष्टुह अवनगात्रदी ॥ ५९ ॥ यागयागिनीमनास
मनसराव २ अष्टमभनधीरुव ॥ ६० ॥ ५६ ॥ नागदेवदी ॥ गालमा ० ॥ ॐ ॥
कस्वरावमृगागेनीलजीमूगसीकाध २ खर्वलवापलिनयनावाविददनरुयक

॥ ५६ ॥ ॐ ॥ नागदेवदी ॥ गालमा ० ॥ ॐ ॥

महानया ५२

ना ॥ **ॐ** इव द्योमहाकालकृष्णकान्मूर्तिश्चमद्विसिद्धिवनदागाश्चकनगिखपनख
ॐ विष्णुलमानदय्यसिहाविगा ॥ **ॐ** ॥ नियूद्धयापनियुत्तालीदायाद्यवर्ममू
मालारमोलीअक्रापजिनवनाभासनयाविगमहावीना ॥ **ॐ** ॥ इष्टकलालक्षानेजि
काउरुक्रुडिडककाश्चरुजंगअरुनगरुषिगदहालीअस्याविश्यकना ॥ **ॐ** ॥
द्योदवमहाकालजिउवनयापिग ॥ दवासुवननसविगाश्चगगुनवनगधीनाग
रुनवननकमलवेदिगा ॥ **ॐ** ॥ ३० ॥ **ॐ** नागललिग ॥ गालयेप ॥ कात्यादिब
हिगअक्रापजिनमूर्तिगसिद्धिकातिजनगिनिउवनेश्चवर्चलेवाफलकालिगकृष्णकान

कात्यादि ३० वाचन ३०

अक्रुनागाहनवकमूवर्णश्चअसुवरयहनवीसुनश्चगर्जनमानवलमर्दनपायरुन
लीविविधिनियुखलुनविघ्नघनकृदनश्चवृद्धादिलाकपालसिगासकनेश्चदहिन
कनतिधनवलुजियवाचनश्चवनगहयिनमनोसुबोगगिगमने ॥ वामखद्योगयनव
ककपानाश्चवसमूडछाषनमलुपानेश्चानवृश्चवानाअष्टटहास्पइष्टकलालला
लजिहा ॥ **ॐ** द्यवर्मनिवशनननमूदमाल ॥ अलिबलिखादनसिद्धिरुली ॥ गवमि
सुनगजगुनगलक्षाने ॥ इरुणावनासनसिसानगनर्णश्चवृद्धधर्मभासनसिद्यपविनक
ल ॥ **ॐ** इमहाकानगवपादशनेष ॥ **ॐ** ॥ ३१ ॥ **ॐ** ॥ **ॐ** ॥ **ॐ** नागवनानिगावमा ॥ ०

कर्मनानामिह

॥ वामलघनधनदहिनकनजिरयागननापुनमृदुमालरुधिगा ॥ ५२ ॥ नावयिजकजनि
बजयागिनीशनिनेयदवागिठवनपुविष्ठा ॥ ५३ ॥ मूलसुश्रानादवीनिरुजहनदवीर
धुनयपुदवीधुनयसहावा ॥ ५४ ॥ कालमृग्युयियाधधेधियाशनागद्वयमारुकन
जिनकुदि ॥ ५५ ॥ धृष्टिसेहानमीगान्दीदवीरमारुमागदवीउक्तययिधनलो ॥ ५६ ॥
॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥
कूमरपियवर्षसमैदहश्वठनवदनकुवलयदलसमनेषकागिगा ॥ ७१ ॥ नमामि
धीधामरामशुधीसकनगुननायसनगुनरकूमगिदहनहानयकागिगसर्वहहाननि

५७
५८
५९
६०
६१
६२
६३
६४
६५
६६
६७
६८
६९
७०

धिवनगता ॥ ५२ ॥ पथमकनद्वयधनिगवजधर्षमृदामालिगननाजिगाशद्विगियाक
धधनगतायहानकध्वठथधगसवैधुनधना ॥ ५३ ॥ डरुयठउपाठवनधमनापच
ठथवामधगयसुकाशनगनमकुठठिनयजालिग किलिषनासनरविवना ॥ ५४ ॥ नि
वृद्धिवृद्धिरायिनिमिर्हरुनिगा सर्वहहाननिधिवनपुदारवनधकमलधिनगगवनि
यापनेमायवजन्माना ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥
वक्रमलापनिदिनकलमपुल सिन्दुनवर्षधमोदयायागिनीशनीदवीपागवर्षमका
ननातवमद्विरुलनविहवयकायनीयागिनीशदहिनवामदादरुचिगवध

गा। वरुणाद विष्णो मगलु निरसयल सुवच नि। गव नटागा अनगम द्विसिद्धि वलपदा ॥
 ॥ नन्दनवनमिव वन्दत गव व। अनग कुसुम पा निजा गवन र निगार्ग म सनवा गम मि
 गाव अनग गो ध सुनिर्मना ॥ ३ ॥ अरुण वव अरुया गिनी दवी अनग दवा सुव कृपा
 या र अरुण हार य र निग निव दाननी अनग वि दानि वाननी ॥ ४ ॥ विष्णो पिंगा
 न निदवी अरुय निव जन सा गिम य र अरु म ध सुख रु ल दाय नी दवी अन्म अन्म
 ठ हवन गति ॥ ५ ॥ ॥ १ नाग य दू जालि ॥ गा स मा धा ॥ उदि ग हवन क मला
 सन के ल न ल लि ग पदा वन सुख ॥ २ नी मल ह दय क र ग म य ना धा द हि अरु

यवन युदा गा ॥ ६ ॥ उरु द व रु ग रु ग सन ना र शिख वन वा ये त ज ग त ड व निया र
 य मा मि वृ ग म ला के ध्वना ॥ ७ ॥ कन कला ग म पि हा ल वि ह पि ना क न क यु व ग
 धा वि श्वा म के न धे न व ल द अरु व न स ह र ज अ न न द न न गि र अ न न ल क क कि न न ग
 न य जि या ल ल ला ग व न सि ने ग ग धा लिया र मि मि न धा ने ख ल मा कृ प दा गा २ ड ठा
 न या य र ॥ ख रु न ना र न क व र्ण मुख न रु सु ना व ना सु व न रु ग सी य ॥ २ न व र ख वि ग रु
 ग कालि ला के ध्वन र म ए म ल ल रु व वि रु य ॥ ३ ॥ ॥ १ नाग ल लि ग ॥ इ ज मान ॥ अरु द ल स ना ज ड रु व य का धि ग र धी ग म मू नि व न धन ला व ना र

तासु ॥ ॐ हुरं समाकमसु ॥ स्वस्ति वः कृत्वा वदः स्वस्ति देवाः सगवकाः स्वस्ति सवो निरुगानि स
 वकायं दिगीतु वध वदय ध्या नूरातन दतन नमिनय । आयाथः समस्ति गुनः सदा धर्मः समस्ति तां ॥
 स्वस्ति वादियदा शानु स्वस्ति शानु चरु ददा । स्वस्ति वा वदतां माग्ने स्वस्ति युवा गतं सुच ॥ स्वस्ति वा
 स्वस्ति दिवा स्वस्ति मध्यादि नस्ति त सर्वं स्वस्ति वा शानु मायेषा न्याय माग्ने मत् ॥ सर्वस्त्वाः सर्वपादाः
 सर्वरुगा वकवलाः सर्ववसुधिनः सर्वं सर्वस्ते निशमया सर्वरुदा दिय ध्या नु माकथि न्याय माग्ने म
 त ॥ गानी हरु गानि समागतानि सुगानि ह सावध वा कलिक ॥ कर्वन्तु मे गी सततं यदा स दिवा त्रयाणे
 तत कुधर्म ॥ दान परं जजमानस्य आयुः प्राप्य कामनां ॥ श्रीमद्गुरु लंसा य कामे नार्थ धीम

तदीधीयत्कसमववजवादी आराधन अहो वैरा नमि नत्वं । ॐ अग्र कल २ दं ॥ अग्निस्तु गन ॥
 ॐ वदयं जनम् ॥ ३ ॥ सर्वरुहं नदी जन ॥ भक्त ॥ ॥ तय कालिकाग्नि मध्या गी का वकी यद्म मालं य
 तदुय विरंजगं । रुका धामि नगुले प्रकाश इव पीतवर्णं भक्तमुखं तदु रुडं वामिदं कुकमलु वृ
 धव सर्ववद्रा क मालाधरं पीता वत्रा रुवर्णं सखं यक्षाय विमिनं चित्तं कुडाम कूट धात्रि त
 वद सत्वाल कृग मोलिर्ष समय विविता ॥ ॐ नरुहिसदा रुत दव विदितां सतु मग
 रिमा कृ मि मा ता वं आसि स निदिता रुव । ॐ ह्य नमो नमि मा वा अ ॥ ॐ आः ट किं ज
 रं ॥ ३ ॥ ॐ निमलु सट किं वा ज मूदा या आ द यो ॥ ॐ निता जन ॥ ॐ आः खलु वा

[illegible][illegible]

रुद्र रुद्र ॥ ॥ गदनूय विष्णु नमः ॥ ॐ श्रीः स्वस्त्यस्तु ॥ ॥ श्रीः ॥ ॥ ॐ श्रीः ॥ ॥
 घृताक्षि ॥ ॐ श्रीः स्वस्त्यस्तु ॥ ॥ श्रीः ॥ ॥ ॐ सर्वपापानां नशयन्तीति स्मृतम् ॥ ॥ अजमा
 नद्यलकाक्षि ॥ ॥ गताक्षि मुखं नकोपलय वरुण लयमानं धुक्क वरुण विरुण ॥ ॥ ॐ श्रीः
 (मन्त्रस्वाहा ॥ घृताक्षि ॥ स्वस्त्यस्तु ॥ ॥ ॐ श्रीः ॥ ॥ ॐ श्रीः ॥ ॥ ॐ श्रीः ॥ ॥
 दलयन्तु ॥ निखदं नद्य तयुः ॥ ॥ ॐ श्रीः ॥ ॥ ॐ श्रीः ॥ ॥ ॐ श्रीः ॥ ॥
 यक्षाक्षि ॥ ॐ श्रीः ॥ ॥ ॐ श्रीः ॥ ॥ ॐ श्रीः ॥ ॥ ॐ श्रीः ॥ ॥
 स्वाहा ॥ श्रीः ॥ ॥ ॐ श्रीः ॥ ॥ ॐ श्रीः ॥ ॥ ॐ श्रीः ॥ ॥ ॐ श्रीः ॥ ॥

वृद्धाय स्वाहा ॥ श्रूयामाग्नेसि ॥ ॥ उं वृद्धकृत्वाय स्वाहा ॥ वटसी ॥ ॥ उं वृद्धयस्त्रुय स्वाहा ॥ उं वृद्ध
सि ॥ ॥ उं वृद्धगतिप्रदाय स्वाहा ॥ शमिसि ॥ उं वृद्धवृद्धाय स्वाहा ॥ श्रुत्वाहसि ॥ ॥ उं वृद्धवृद्धाय स्वा
हा ॥ शमिसि ॥ ॥ उं वृद्धवृद्धाय स्वाहा ॥ वृद्धतनू ॥ ॥ उं मधून स्वाहा ॥ मधून ॥ ॥ उं श्रुत्वा
य स्वाहा ॥ श्रुत्वाह ॥ ॥ उं सर्वयाय य समनाय स्वाहा ॥ वेकंथसि ॥ ॥ उं वृद्धसदृकाय स्वाहा ॥ श्रुः
मुख्य ॥ ॥ उं सर्वकृत्वाय समनाय स्वाहा ॥ कंदवर्गलियुक्ति ॥ ॥ उं श्रुत्वा दश ॥ ॥ उं श्रुत्वा
तव स्वाहा ॥ कृष्ण ॥ ॥ उं वृद्धाय स्वाहा ॥ दूर्वाकुतु ॥ ॥ उं सर्वयाय दहनव स्वाहा ॥ उं सर्वयाय
दहन स्वाहा ॥ किलस्य ॥ ॥ उं वृद्धय स्वाहा ॥ श्रुत्वा कुतु ॥ ॥ उं वृद्धवगाय स्वाहा ॥ यं व

ऊधवसि वसाव श्रववश्रनतिब्धती श्रवनिदवती सूत्र वरा (ययाक साववती) निखलामु
 ऊऊमानस्य दिशिदिश ४ सादा ॥ ॥ कनकलावलि ॥ ॐ श्रीः ह्रीं की कनकवसवसख वसकलिः
 सर्वरुयययक विब्धवलि गन्धययधयदीयवाकतंददाम्पदं सर्वदेवतागयकगन्धवा सूत्र
 गन्धुकिन्न वमहावगादयय (धर्वयोथय) रुऊथमादययिथथडिय ७ मम ४ मनसिद्धिं यथ रुः
 ॐ श्रीः ह्रीं की ह्रीं रुट सादा ॥ ॥ थनमहावलि विथ ॥ ॐ तं तावलि रुवना वलिगन्धवि रुव
 वंकावली श्रमिमेलुलं कंकावली मिमं श्रीकावली यद्य रुऊनं ततरुकादिकं ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं रं ॥
 लोमां यो जं ॥ नदधिलिगयं वामन पञ्चयदिप रुहाडी रुकाव रुतवधु यथाकर्मयकृति ॥

गन्धवर्णविथरु वन वायुयविग कलिगामि तावविलिना विडा कलादिकं भरुनवधु रुतवधु ॥
 दधिरुगंदशू रुगायालालसवधु रु रुवाधमूखामृगमय धुकखलांगविलिना दवयामनं न
 दूयविम्रालिकाविडं चंडाकी ॥ ॐ श्रीः ह्रीं ॥ वसिः सवतथगतादीनां वाधिविहसि न सागवादि
 रु श्रुमनमाकृष्यकर्मताविलिनमवः लाकयन ॥ श्रीकथन याद्यादि यथन्यास अकिनीत्या
 दि ५ ॥ ॥ श्रुन्यान्यानुगतासवधम ॥ ॐ यत्रस्य वानुगतासवधम ॥ ॐ नृत्तकानुयवितासव
 म ॥ ॥ दययमानं समययमानं नदक वायव्यययमानं ॥ मरुसक नरुवयवता ॥ दयायमा
 नृगुरुता ४ ॐ श्रीः वडाललिलाऊं ह्रीं वं ॥ वडाललिलाऊं ह्रीं ॥ ॐ वडावविहः वडावावाही सम

ॐ वरुधूयशां स्वाहा ॥ धृष ॥ ॐ आऽवका लोकदी स्वाहा ॥ दीय ॥ ॐ वरुसुखम लायसा
य स्वाहा ॥ कस ॥ ॐ वरुगाम्बूय स्वाहा ॥ गात्र ॥ ॐ वरुसयिषूकाय स्वाहा ॥
गैययकात ॥ ॐ सर्वयोगयसमनाय स्वाहा ॥ आयधि ॥ ॥ सुविधि ॥ ॐ वरुवसंक
लाय स्वाहा ॥ कसुमा ॥ ॐ सर्वविनांकात्राय स्वाहा ॥ गतय ॥ ॐ वरुविजयहं रुद
स्वाहा ॥ सुमुख ॥ ॐ सर्वकर्मकत्रिय स्वाहा ॥ नामकगल ॥ ॐ वरुमददहं स्वाहा ॥
यद्वाकगत्र ॥ ॐ रुत २ हं रुट स्वाहा ॥ संजवस ॥ ॐ वरु २ सर्वकायसिद्धमदविः
रुय स्वाहा ॥ कुरुस ॥ ॐ मदमदसर्वदेवानहं स्वाहा ॥ कयव ॥ ॐ वरुगिरवहं रुद

स्वाहा ॥ वरुवन्दन ॥ ॐ जयजयहं रुट स्वाहा ॥ धीखतु ॥ ॥ ॐ हित्रययद स्वाहा ॥ राम
वक ॥ ॐ सर्ववत्तयद स्वाहा ॥ गन्धर्व ॥ ॐ समयसर्वभावयदी स्वाहा ॥ अंगुव ॥ ॐ स
र्वसैयामसाधयदीयुर्विकुव स्वाहा ॥ युयुधि ॥ ॐ कविचनिसर्वसिद्धिकुवदी स्वाहा ॥ वरुमित्र ॥
अन्यथागिरिवन्दनय ॥ ॥ धनसुखियाकन ॥ वरुमहात्राडिका आरुमि ॥ ॥ दानयतउजमा
नस्य आयुआत्रागकामनार्थ ॥ ग्री २ धृषमायुविबटक विवधकविन्यादकवलातां सुखिदका
मनार्थस्वस्ति स्वाहा ॥ १ ॥ दानयतउजमानस्य ४ कर्मव्रतयाज्यग्रीनयातमकुल यल्लुहमानाक
त्याधकामनार्थस्वस्ति स्वाहा ॥ २ ॥ दानयतउजमानस्य सर्वसुखस्य आयुआत्रागकामना

नस्तु विभावति हनवति यक्षाष्य नास ताहिडी ननु ह उह्वामिकवधरु यक्षनृत्तवत्रा
 यू मुखावाडिवत्रावति ॥ वक्षःशकमहं वत्रा विश्वयायमहावला कामदवाह विधेव चन्द्रस
 र्या क्वयगला ॥ पृथिव्याशयवत्राश्च व क्वयवतयसुथा ॥ धर्मराजाग्रनागाश्च गन्धर्वसुवर्किनः
 वा ॥ जयमिही तथायवा अगनिष्ठा निवासिनः महावजास्तुतायव निम्ननिवडावकिनः ॥ निम्न
 नवकिदवाश्च मुक्तावाष्णीयगायश्च ॥ मात्रिविलाकक्षरुह महाक्षरु निवासिनः ॥ वरुदियहिः
 कासत्वाः स्तितायवकिक्षरुषु ॥ रुडनसत्त्वलाकाश्च लतागुल्महृत्तायव मृदितारु मिस्तिताय
 व विमलाशययवावगा ॥ अश्विष्मनी निवासाव त्रिवलायां कर्ता कर्तायव ॥ धर्ममद्यानूगाय

[illegible]

हं नमः श्रीवक्रवाचाय ॥ यथा मया कथां ध्यायन् ध्यानकाव क्रियात्तरुना सुवसुत्त वलिः
विसृजन्नासिन्धुव्यूहा बहुस्य तिसमाधिजाय कलेशयूजा कम्पन्यागं यावन्त्यागं ध्यायन्ति
व कोलास्याम् ॥ ॥ तत्त्वाधीवक्रवाचाय सर्वयाय प्रसादनी ॥ सावविश्वं मनीयवी बहुलैरुलदा
यनी ॥ ध्यान ॥ गणनास्ति कथं कावला विश्वदलयन्तं तदयं विद्युत्सदृशं यथा मया यथा निमग्नं स
र्वकावगर्भकं कियं विनामनं आत्मानं वक्रवागिणी म्मावय ॥ द्विभुजा द्विमखी द्विभुजा ॥ धेव
कलिकया वक्ष्ये वही ॥ मरु कक्षा येन ग्रावणि नृगानवजो वना नावधायक मडाये रुषिणा सह
रता ॥ यश्च वृद्धमहामुक्ती अर्हयर्थं कृता पुवी ॥ उवासीन्द्रवशादृष्यं कोलास्यादक्षि ॥

गणः कावस्यावासतया विवक्रवयसमन्विता ॥ समृद्धि यत्र मा ॥ धनसहस्रसखकवलात्तिकां ॥ ॥ तत्त्वा
ध्यायन्तीयवी आत्मानं सवरावरा ॥ उद्धवंदा श्रीमगवजवादीयवी रुद्रात्रकाय यादं युगिदु
स्वादा ॥ ॥ यथा ॥ ॥ ॐ ३ सर्ववृद्धा किनीयवजवर्जुनीयवजवरावनीयवजययी आः
रुद्र ॥ मय ॥ ॐ वं वक्रवाचादीवक्रवय्या आः रुद्र स्वादा ॥ ॐ हां यां यामिनीवक्रवय्या आः
रुद्र स्वादा ॥ ॐ ह्रीं मां मादनीवक्रवय्या आः रुद्र स्वादा ॥ ॐ ह्रीं संचात्रिणीवक्रवय्या आः
रुद्र स्वादा ॥ ॐ ह्रीं संज्ञासिनीवक्रवय्या आः रुद्र स्वादा ॥ ॐ ह्रीं २ वलिकार्यवक्रवय्या आः
रुद्र स्वादा ॥ ॥ षट्का ॥ ॥ ॐ वा मावहन ॥ यथा मया वक्रवाचा मुक्ति ॥ वक्रवधूक संकोशता